ज़िंदगी से रुबरु

(कविता संग्रह)

अंजलि अग्रवाल

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Anjali Agrawal 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-664-6

Cover design: Deepak Katheria
Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: June 2026

स्वर्गीय श्रीमती गोमती अग्रवाल मेरी माता जी को मैं यह पुस्तक समर्पित करती हूँ। श्रीमती गोमती अग्रवाल बहुत ही कर्मठ दृढ निश्चयी और बुद्धिमान महिला थी उन्होंने ही मुझे हमेशा अच्छा काम करने और मेहनत करने के लिए प्रेरित किया है जब मैंने लेखन की शुरूआत की तब मेरी माता जी ने ही हर बार मुझे प्रेरित किया। वो हमेशा मेरी बहुत अच्छी मार्गदर्शक रही है।

अंजली अग्रवाल

साहित्यकार

अंजलि अग्रवाल का जन्म 14th Dec. 1980 को मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले के एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था पिता जी राम कुमार अग्रवाल (बिजनेस मैन), माता जी स्वर्गीय श्रीमती गोमती अग्रवाल (ग्रहणी) और छोटा भाई अखिल अग्रवाल

बचपन से ही बहुमुखी प्रतिभाओं में निपुण होने की वजह से सभी के साथ अच्छा व्यवहार था। 1998 में science से 12th complete किया फिर Biology में स्नातक की डिग्री 2002 में complete करी उसके बाद कमला राजा गर्ल्स कालेज ग्वालियर से 2003 में Zoology में स्नातकोत्तर (Master Degree) प्राप्त की।

2005 में (Computer Science) से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की और फिर शिक्षिका का काम किया। लेखन का शौक कालेज के समय से ही था तो जितना समय मिलता उसी हिसाब से कार्य करती थी।

चित्रकला में भी बचपन से काफी रूचि थी और उसे अपने profession के रूप में बनाया और बड़ी बडी gallery जैसे ललित कला अकादमी, AIFACS Gallery और कई सार Art Fair में भी participate किया।

लेखन में मेरी बहुत रूचि है विभिन्न विषयों पर कविताएं और लेख बडी ही खूबसूरती के साथ लिखती हूँ।

जिंदगी से रुबरू मेरी पहली पुस्तक है और कोशिश करूंगी कि आगे भी मैं और सुंदर पुस्तकें आप के लिए प्रकाशित कर सकूं।

अंजली अग्रवाल

पुस्तक सारांश

जिंदगी से रूबरू (कविता संग्रह) मेरी पहली पुस्तक है इसमें जो भी कविताओं का संग्रह है वो मेरे दिल के बहुत करीब है जिंदगी से रुबरू पुस्तक वो सभी कविताओं का संग्रह जो हमें जिंदगी से पहचान कराती है, जिंदगी के जितने भी पहलू जैसे, प्रेम, सुख, दुख, कर्म, मित्रता, समझ रिश्ते, मनोभाव समाज सही, गलत, सभी विषयों पर खूबसूरत और प्रेरणादायक तरीके से समझाया गया है।

समाज की कुरूतियों को नीतियों को काव्य के जरिये सुंदर ढंग से समझाने की कोशिश की गयी है।

कविताएं बहुत सुंदर तरीके से मनमोहक शब्दों के साथ रची गयी है, इन्हें पढ़ने के बाद आपको अति आनंद की अनुभूति होगी जीवन के कई विषयों पर अच्छे अनुभव मिलेगे।

कविताएं हमेशा हमारे मन को लुभाती है और कम शब्दों में पूरा अर्थ समझा जाती है। जिंदगी से रुबरू (कविता संग्रह) आपके जीवन के हर भाव को छूकर जाएगी और मन आनंदित कर जाएगी। मेरी आपसे प्रार्थना है कि इन्हें बड़े प्यार से अपने जीवन में उतारे, ये आपके जीवन को एक नई प्रेरित और सुकूनमय दिशा प्रदान करेगी।

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप मेरी कविताओं को दिल से पढ़े और जीवन के हर भाव को समझे।

जिंदगी से रूबरू

जब हम जिंदगी से “रूबरू” होते हैं तो वे सारे विचारे जो हमारे अपने होते है और जो सपने सच्चे होते है वो हमसे बहुत दूर होते है जब आती है हमारे सामने जिंदगी की हकीकत तो अच्छे और बुरे में, सच और झूठ में, दर्द और दवा में, प्यार और नफरत में फर्क कर पाना मुश्किल हो जाता है मुश्किल हो जाता है एक लकीर खींच पाना, पाप और पुण्य में, हर युग में बदल है धर्म, आदर्श, संस्कार, हर युग में बदलती है मर्यादा, जब मर्यादा तोड़ने लगती है, जीवन का प्यादा

जब जिंदगी की हकीकत हमारे सामने अपना बयान देती है तो ख्वाबों के सारे सबूत और गवाह झूठे पड़ जाते हैं।

हर इंसान के लिए जिंदगी के मायने अलग-अलग होते है और इसे जीने के अपने-अपने ढंग व रंग होते है।

कभी जिंदगी जरूरत और मजबूरी के वास्ते हमें अपने मायने बताती है तो कभी हमारी इच्छाओं के ख्वाबों के चलते।

सभी इंसान एक दूसरे से जुड़कर समाज बनाते हैं सभी के विचार जब टकराते है तो विवाद उत्पन्न होते है हमें जरूरत होती है विचारों में तालमेल बिठाने की तथा एक दूसरे की भावनाओं को समझने की जिससे रिश्तों में प्यार और सच्चाई आ सके।

माना कि इन रास्तों पर चलकर वह अपने विचार, अपनी इच्छाएं, अपने सपने कहीं दफना देता है या कहना चाहिए कि वह खुद जो अपने लिए सपने सजाता है उन्हें पूरा नहीं कर पाता।

लेकिन अपनो के बीच रहकर, अपनो के साथ जुड़कर, उनको प्यार देकर, उनके लिए कुछ त्याग करके एक अलग ही अपना व्यक्तित्व निखारता है जो सराहने (Ideal) कह सकते है।

बस कहने को हमें कुछ नहीं मिलता पर वास्तविकता में वो सब जो हमारे आसपास होता है और जो हमसे जुड़ा होता है वो बस हमारा ही होता है।

इस तरह जब हम जिंदगी से रूबरू होते है तो जिंदगी के सही अर्थ को जान सकते है और जिंदगी के सही मायके निकाल सकते है।

“हो जाओ तुम जिंदगी से रूबरू और जान लो उस हकीकत को जो तुमसे है अभी बहुत दूर करो सामना इस हकीकत का और दो उसे सलाम प्यार का करो सामना अब हिम्मत से सच्चाई से मेरा दावा है तुम जीतोगे हर बुराई से।”

अनुक्रमणिका

जिंदगी से रूबरू.. 2

गुलमोहरी की बाग 4

प्रेम की चाहना.. 6

नतमस्तक प्रभु आपको... 8

संयम सत्यता साधना 10

प्रेमाश्रित प्रस्तुति हो गई 12

उस राह से भी गुजर 14

हर रंग हो सुनहरा... 16

ये क्या नजारे दिखा रहा है 18

सच्चे मोतियों की माला गढ़ेंगे 20

दूल्हा बिकता है पगड़ी और शेरवानी में 22

जिंदगी से रूबरू.. 26

हकीकत को ही सपना बना लें... 28

मुझे चाँद चाहिए 30

सजना के लिए.. 32

सुंदर सपना 34

ये जीवन है... 36

मन वंदन है 38

मम मन 40

मन की सोच 42

गणतंत्र दिवस 44
हम तुम कौन होते हैं 48
दोस्ती 50
स्त्रीत्व और सतीत्व 52
अभीप्सा.. 56
प्रेम, कर्तव्य और सत्य 58
चंद कागज के टुकड़े.. 60
तुम सिर्फ मेरे हो जाओ.. 62
प्रेम की संपूर्णता 64
बातें है अनमोल 66
स्वाभिमान 68
संवर जाते हैं 70
अपने ही गम से खाली नहीं... 72
शृंगार.. 74
जिंदगी का सफर.. 76
साजिशों के खंजर 78
बौद्ध ऐसे बनते हैं.. 80
अमर वरदान.. 82
राहों में चलते चलते.. 84
जीवन साथी 86
स्मृतियाँ.. 88
बंधन रहित प्रेम 89

संशय 91
गांव की लड़की 93
मन की दुनिया 95
खुशबू भावनाओं की 98
गुम हुई मैं 100
सतरंगी आसमान 102
तलाश... 104
शब्दों का प्रवाह... 106
आखिर क्यों.. 110

जिंदगी से रूबरू

जब हम होते है जिंदगी से रूबरू तब दिल और दिमाग में
होती है कुछ गुफ्तगू तब ये दोनों आपस में करते है बात
और कहते है ये साथ-साथ
कि अब तक तो करते आए
हम अपनी मनमानी
पर अब न चलेगी हमारी ये मस्तानी
चलना होगा अब साथ में
हाथों को लेकर हाथ में
हर उस बात को भूलना होगा
जो हमारे हिसाब से सही थी
अब हमें राह बदलनी होगी
और आना होगा उस राह पर
जहाँ खड़ा है समाज
हमारे चारों तरफ चेहरा लगाए जहाँ खडी है
रीति रिवाजों की ऊंची-ऊंची दीवारे
सर पर सामाजिकता का सेहरा लगाए
बस अब इसी रास्ते पर गुजरकर
पूरा करना है हमें जिंदगी का सफर।

गुलमोहरी की बाग

“प्रगति से प्रीति करो,
रीति से नीती करो।
कर्म चंचल राग है,
प्रणति की जो आग है,
कि सत्य के पथ पर ही,
गुलमोहरी का बाग है।”

प्रेम की चाहना

प्यार जहाँ की सबसे प्यारी अनुभूति है,
जो हर दिल को छू ले, एक ऐसी विभूति है।

प्यार मर्यादा है, सत्कर्म है, संस्कार है,
बडो के प्रति आदर है, सम्मान है, शिष्टाचार है।

प्यार धर्म है, कर्म है, आदर्श है,
त्याग है, राग है, प्रियदर्श है।

प्यार रोग है, जोग है, निरहंकार है,
काम है, हया है, अलंकार है।

परिणय है, परितोष है, ये है परिभावना,
अपने हर कर्तव्य को प्यार से निभाना,
दिल में सदभावना,
यही प्रेम की चाहना।

नतमस्तक प्रभु आपको

“भावना के फूल मैं आपको अर्पण करती हूँ।
प्रेरणा की खुशबू में आप से ग्रहण करती हूँ।।
आप बड़ो के आशीर्वाद की छाया में,
मैं अपना व्यक्तित्व सुसज्जित करती हूँ।।”

आप बड़ो का आशीर्वाद
इस पारसमणि के समान है
जिसे छूते ही लोहा
कंचन में परिवर्तित होता है।
आपके प्यार और दुलार रूपी
महल में वास करके
हमने हर तरह के राजसी सुख पाए हैं।

नादान हैं हम भोले है,
अनजान हैं अपनी गलतियों से
सब कुछ भूलकर माफ़ हमें कर देना
बस अब इतनी दया हम पर कर देना
इस असीम प्यार को
हम पर यूँ ही बरसाते रहना।

प्रभु ने कृपा हम पर की है,
नतमस्तक प्रभु आपको,
नतमस्तक प्रभु आपको।

संयम सत्यता साधना

“संयम सत्यता साधना,
जीवन का मंत्र है ये ऐसा।
हो सच्चे हृदय से आराधना,
पूरा होगा हर कार्य हो चाहे जैसा।।”

विश्वास रखना है खुद पर और भगवान पर
लेकिन प्रयास करना है केवल खुद को
परिस्थिति हो कैसी भी
पर कभी मत कहना कि
प्यार नहीं है प्रभु को हमसे
दुख होता है उन्हें
क्योंकि जितना चाहते है
हम हमें व अपनो को
उससे भी कहीं अधिक
प्यार करते है प्रभु हमसे
बस वो हमें सिखाते है
इस जीवन धारा को
जो कभी इधर है तो कभी उधर

“करूणा बरसाते है हम पर असीम।
रहते है सदा वो हमारे समीप।।”

प्रेमाश्रित प्रस्तुति हो गई

“प्रेमाश्रित प्रस्तुति हो गई”
प्रीति से प्रीति हो गई,
मन की ये रीति हो गई,
द्वेष की अवनति हो गई,
सत्कर्म की अनुकृति हो गई।
श्री राम की सहमति हो गई,
सुसंस्कार युक्त संस्कृति हो गई,
सुसाहित्य की उन्नति हो गई,
प्रेमाश्रित प्रस्तुति हो गई।

भावना से स्तुति हो गई,
प्रेम की कीर्ती हो गई,
संस्कार की उपस्थिति हो गई,
कुमति की अंतगति हो गई।
हर हृदय की सममति हो गई,
प्रेमाश्रित प्रस्तुति हो गई।।

उस राह से भी गुजर

ऐ नेक खुदा के बंदे
कुछ तो नेकी कर
जहां हो परोपकार की तपन
उस राह से भी गुजर
उस राह से गुजर
जहां सत्य हो तेरा हमसफर
प्यार से खुशबू से
परिपूर्ण हो तेरा सफर
सत्संग से भरी रहे
सूनी न हो तेरी डगर
कर्मठता का सहारा हो
अशिष्टता का न हो कोई वर्ग
संतुष्टी का संदर्भ हो
धरा पर ही हो अपना स्वर्ग।

हर रंग हो सुनहरा

तुम्हारे जीवन में हर रंग हो सुनहरा
खुशियों पर हो चांदनी का पेहरा
कोई एक रंग हो इतना गहरा
सर पर हो तुम्हारे चांदनी का सेहरा
शुभ हो हर वो दिन
जिसमें हो तुम्हारी प्रस्तुति
प्रस्ताव हो प्रसन्नता का
हो निर्मम (निष्पक्ष) स्तुति
स्मृति हो सदभाव की
प्यार का हो साया
निर्मलता हो जीवन में, यही मेरी अभिलाषा।

ये क्या नजारे दिखा रहा है

बता मुझे ए जहां के मालिक
तू ये क्या नजारे दिखा रहा है
तेरे समंदर में क्या कमी थी
जो आदमी को रूला रहा है
आदमी आदमी को सता रहा है
जाने क्या बता रहा है
आदमी किस बात पर अडा है
और तू क्यूँ मूक खड़ा है
कभी उतर जमीं पर
और देख वो नजारे
जो तू हमें दिखा रहा है
तेरे समंदर में क्या कमी थी
जो आदमी को रुला रहा है।

सच्चे मोतियों की माला गढ़ेंगे

लम्हा-लम्हा जुड़कर
बनती है एक कहानी
उसमें है खुशियों का पैगाम
और दुखों की रवानगी
और कुछ है खट्टी मीठी यादें
जो छोड़ जाती है अपनी निशानी
कुछ लम्हें है प्यार के
जो भूलकर भी नहीं भुलाए जाते
कुछ लम्हें है दुलार के
जो हर पल हमें याद आते
कुछ लम्हें है दर्द के
जो अक्सर हमें रुला जाते
कुछ लम्हें है फर्ज के
जो हमें बहुत कुछ सिखा जाते
कुछ लम्हों का इतना गहरा है अहसास
कि वो लम्हें कब के गुजर गए पर फिर भी है पास
इन प्यारी खट्टी मीठी यादों के सहारे ही
है मेरे जीवन की आस
अब मन में है चांद को पाने की अभिलाषा
और जीवन की है यही चाहना
कि इस कहानी में जितने भी लम्हें जुड़ेगे
मिलकर सच्चे मोतियों की माला गढेगे
जिसे हम ईश्वर को अर्पण करेंगे।

दूल्हा बिकता है पगड़ी और शेरवानी में

हमने सुना था एक कहानी में
कि ऐसा भी होता है इस समाज प्रणाली है
कि अक्सर दूल्हा बिकता है
पगड़ी और शेरवानी में
जितनी मंहगी होती है पगड़ी
अतः जितनी ज्यादा होती है उसकी कमाई
उतनी ज्यादा कीमत लोगों ने उसकी लगाई
शेरवानी में जितने जड़े होते है तारे
अतः जितनी होती है पुश्तैनी जायदाद
उतनी ही तेज होती है वर पक्ष की आवाज
भावनाए सपने ये तो सब है बाद में
ये सब शायद अब तो हैं हमारी याद में
अब तो हकीकत है
पैसा और दिखावा
अगर पैसा है हमारे हाथ मे
तो सारा समाज है हमारे साथ में
पैसे से ही हमारी पहचान है
और पैसा ही हमारा मान है
अगर पैसा नहीं तो हमारा
एक कदम चलना भी दुस्वार है
बस हर दिन रविवार है
इसीलिए पैसा ही जीवन का सार है
बाकी सब बेकार है।
किसी ने खूब कहा है
ये माना कि पैसा खुदा नहीं है
पर खुदा की कसम
खुदा से कम भी नहीं है

आपको लगता होगा कि
मैं ये क्या सुना री हूँ
पर खुदा की कसम
मैं भी दौलत की पक्की पुजारी हूँ
मैं पुजारी हूँ उस दौलत की
जिसे कहते है दौलत प्यार की
जिसे कहते है दौलत सदभाव की
जिसे कहते है दौलत सतकार्य की
जिसे कहते है दौलत आचार-विचार की
जिसे कहते है दौलत संस्कार की
मैं पुजारी हूँ उस दौलत की
जिसे कहते है दौलत प्यार की
जब होती है कर्मठता सच्चे भाव से
प्यार के साथ
स्वयं लक्ष्मी आती है वहाँ
दुलार के साथ।

जिंदगी से रूबरू

जब हम होते है जिंदगी से रूबरू
तब दिल और दिमाग में
होती है कुछ गुफ्तगूं
तब ये दोनों आपस में करते है बात
और कहते है ये साथ-साथ
कि अब तक तो करते आ
हम अपनी मनमानी
पर अब न चलेगी हमारी ये मस्तानी
चलना होगा अब साथ में
हाथों को लेकर हाथ में
हर उस बात को भूलना होगा
जो हमारे हिसाब से सही था
अब हमें राह बदलनी होगी
और आना होगा उस राह पर
जहाँ खड़ा है समाज
हमारे चारों तरफ पेहरा लगाए
जहाँ खड़ी है रीति रिवाजों की ऊंची-ऊंची दीवारे
सर पर सामाजिकता का सेहरा लगाए
बस अब इसी रास्ते पर गुजरकर
पूरा करना है हमें जिंदगी का सफर।

हकीकत को ही सपना बना लें

हम चाहते हैं सपनों को हकीकत बनाना
क्यों न हम हकीकत को ही सपना बना लें
हमारे आसपास बिखरी है जो खुशियाँ
उन्हें समेटकर अपने मन में बसा लें
हर पल को खुशी का पल बना लें
और हर पल में हंसी को छुपा लें
कोशिश करें कि हम किसी को प्यार दे सके
हो सके तो सभी की सहायता करें
अच्छा न कर सकें तो बुरा भी न करें
प्रार्थना करें कि प्रभु सभी के दर्द का निवारण करें
कोशिश करें कि जिंदगी में आगे बढ़े
पर जो भी करे सच्चाई से करे
सदभाव सत्कर्म को ही हकीकत बना लें
क्यों न हम हकीकत को ही सपना बना लें।

मुझे चाँद चाहिए

मैं उस मुकाम पर पहुँचना चाहती हूँ
जहाँ मैं रहूँ सबसे कुछ अलग
इतना अलग हो मेरा अस्तित्व
कि अगर मिल जाऊँ मणि रत्न में
तब भी रहे एक अलग व्यक्तित्व
योग्यता हो इतनी
कि जो मुझे पहचाने
वह मुझे चाँद की चमक सा माने बनना चाहती हूँ
वह विलक्षण मूर्ती
जिसका अपना अलग हो आकार
उस मूर्ती को चमकने के लिए
चांद की शीतल रोशनी चाहिए
मुझे चांद चाहिए।

सजना के लिए

40 वर्षीय एक महिला
बाग में टहल रही थी
मन ही मन मुस्कुरा रही थई
और ये गीत गुनगुना रही थी
सजना है मुझे सजना के लिए

ये नजारा मन को बहुत भाया
और मन में ये ख्याल आया
कि लडकी को शादी से पहले
इसीलिए सजना है कि
सजना अच्छे मिले
और शादी के बाद इसीलिए सजना है कि
सजना हमारे ही सजना रहे
इन सजना के लिए
लडकी का सजना जारी रहा
पर क्या कभी सजना ने भी ये
गीत गाया है कि
सजना है मुझे सजनी के लिए।

सुंदर सपना

काश कि ये जीवन एक सुंदर सपना होता
ये जीवन मेरा बस मेरा अपना होता
रहते हम उस घर में जहाँ
खुशियों का बसेरा होता
आंगन में शीतल चांदनी का पेहरा होता
हर पल प्यार का बादल
और भी गहरा होता
फूलों की खुशबू से महका महका
जीवन का हर सवेरा होता
ओस की निर्मल बूँद सा निर्मल मन
हर जीवन का सेहरा होता
अंतर्मन की सुंदरता का साया
हर पल और भी घनेरा होता।

ये जीवन है

तपती धूप में जब राही ढूंढता है छाँव को
कोई तो ले जाएगा सपनो के गाँव को
धूप में खड़े मंजर ही तो
छाँव का सुख देते है
ये जीवन है

जो भी है ये जैसे भी है ये हमारे सपने हैं
सांसों में है तेरी सरगम ये ही सपने अपने है
तुम से सरगम, सरगम से हम
बस ये ही धड़कन है
ये जीवन है।

मन वंदन है

मधुर मधुर मुस्कानों में
सुर सरिता की लहरों में
झर झर बहते झरनो में
निर्मम निर्मल तालों में
हमने देखा ख्वाबों में
सरगम में झनकारों में
कि तुम हो मेरे अपनो में
सच में भी और सपनो में
प्रेम के मीठे बंधन है
सरगम है सुर संगम है
प्रफुल्लित मन से अभिनन्दन है
शोभित शोभित मन वंदन है।

मम मन

मन की छोटी सी मनोकामना
कि मम मन हो मनुहारना
मम मन चंचल मनुहार हो
मनोगति मम निर्विकार हो
मन का मनन कर्मण्य भाव हो
मम मन सदैव सदभाव हो।

मन की सोच

कहां से शुरू होकर कहां तक जाए
कभी है उदासीनता के घेरे
और कभी मन सुखमय हो जाए
हो जाए कब कैसा क्या हमें
क्यों समझ न आए
कभी वहीं चांद वही तारे वही नीले
अंबर और वही नदी, नारे भन को भाए
और कभी मन में कांटे चभाए

कभी लोग जो बोल बोलें वो कैसे भी हो
मन में रस घोले
और कभी लगे वो न बोले बस न बोले
न बोले कोई भी हमसे क्योंकि
शायद हम है तर अपने गम से
मन की सोच कभी अच्छी
है तो कभी बुरी
जहाँ घूम रहा है ये मन
आखिर कहां है वह धुरी।

गणतंत्र दिवस

आया आया गणतंत्र दिवस आया
लाया लाया स्वतंत्र युग लाया
पर क्या वाकई में स्वतंत्र युग आया
और क्या वाकई में है देशवासियों पर
सुख और समृद्धि की छाया
हाँ है पर उस विशेष वर्ग के लिए
जो चलते है अपने हाथ में सत्ता को लिये
मध्यमवर्गीय व गरीबी रेखा से नीचे वाले
लोगों के लिए बस धूप ही धूप है
कोई भी काम होता नहीं रिश्वत के बिना
अरे छोड़ों भी अब क्या करना शिकवा
और क्या गिला
और इस तरह कोई घूसखोरी नहीं होती
केवल फंड में दान दिया जाता है
कोई भ्रष्टाचार नहीं होता केवल
लाभकारी मित्रों को सम्मान दिया जाता है
कोई भतीजावाद नहीं
केवल अपनों की मदद करते हैं
खैर जो कुछ भी है
दान की शुरूआत तो घर से ही होती है
गरीब जनता को खाने के लिए नहीं है रोटी
सर छुपाने के लिए छत भी नहीं होती
नहीं होता प्यास बुझाने को पानी
बस यही है इस महान देश की कहानी
फिर भी मेरा भारत महान
क्योंकि सौ में से 99 बेइमान
सौ में से 99 अगर बेईमान है

तो उस बेचारे एक अकेले का क्या ईमान है
उसक ईमान भी परिस्थिति के अनुसार बेईमान है
क्योंकि ईमानदार रहते हुए वह नहीं कर सकता
अपने परिवार का भरण पोषण
इसीलिए अब तो यही है संदेश
कि जैसा देश तो वैसा भेष
और यह बेईमानी मिटेगी कैसे
I don’t know न ऐसे न वैसे।

हम तुम कौन होते हैं

हम तुम कौन होते हैं
बनाने और बिगाड़ने वाले
आसमां पर बैठे है हमे चलाने वाले
उस ने कर दी एक भूल
हमें दे दिया मन का फूल
फूल में है प्यार की खुशबू
जो मन में ही होती है रूबरू
मन चंचल झरने की तरह होता है
चंचल मन कभी हंसता तो
कभी रोता है
ये सब कौन करता है?
क्या आसमां पर रहने वाला, पर क्यों
वह हमें क्या बताना चाहता है
यही कि हम कठपुतली है और
डोर उसके हाथ में है
वैसी ही गति वैसी ही मति
वैसे ही योग वैसे ही संयोग
हम चाहे या न चाहे पर होगा वही
जो हमारे प्रार्वध में लिखा है
हमें बस वही ही मिला है।

दोस्ती

छोटी से छोटी बात जो कही गयी है
विश्वास के साथ
एक सच्चा मित्र रखता है उसे केवल
अपने ही पास
कई बार ऐसे वाक्या होते है
कि लोग आपके मित्र को
भला बुरा कहते है
और आप उनसे दोस्ती न रखे,
ऐसा कहते हैं,
यही समय होता है मित्रता निभाने का
आप की दोस्ती कितनी सच्ची है
यह दिखाने का
ऐसे में दोस्ती तोड़ी नही जाती
दिलों की भावनाएं यूँ छोड़ी नहीं जाती
सच्चाई को बिना जाने
दोस्त को बिना पहचाने
उसे इस तरह रूलाया नहीं जाता
उभरते हुए जख्मों नमक मिलाया नहीं जाता
पहले सच क्या है ये जानों
अपने दोस्त को पहचानो
हो सकता है तुम्हारा मित्र सही हो
उसके बारे में लोगों को गलतफहमी हो
ये तो सही है कि सच्चे दोस्त तो
किस्मत वालों को मिलते है
दुनिया में ऐसे गुलशन बहुत कम हैं
जहाँ सच्ची दोस्ती के फूल खिलते हैं।

स्त्रीत्व और सतीत्व

तुम जैसी स्त्री बनना
जो सतीत्व को अपना आभूषण बनाए
और हर कार्य पूरे आत्मविश्वास के साथ करे
चाहे दुनिया उस पर कितने ही झूठे
इल्जाम क्यों न लगाए

तुम ऐसी स्त्री बनना
जिसके पास धन हो धैर्य की शक्ति हो
जो अपने जीवन का भरण पोषण खुद कर सके
और हर परिस्थिति में दृढ़ता से आगे बढ़े

तुम ऐसी स्त्री बनना
जिसके मन में ज्ञान और आत्मसम्मान की
ज्योति जले
जो हर कदम सही दिशा में रखे
और अपने मार्ग को स्वयं प्रकाशित करे।

तुम ऐसी स्त्री बनना
जिसके हृदय में दया और करूणा का सागर
हो, लोगों के लिए सदभावना हो
और जो लोगों की सहायता कर सके

तुम ऐसी स्त्री बनना
जिसके भीतर अटूट आत्म विश्वास हो
जो अन्याय के सामने न झुके
जो गलत को गलत कह सके
और सत्य के लिए निर्भय होकर खड़ी रहे

तुम ऐसी स्त्री बनना
जिसकी अंतरआत्मा में कर्तव्य हो
जो अपने कर्म को सच्चाई और निष्ठा से निभाए

स्त्री ये सब कर सकती है
अपने सतीत्व और स्त्रीत्व के साथ
हर ऊँचाई को छू सकती है।

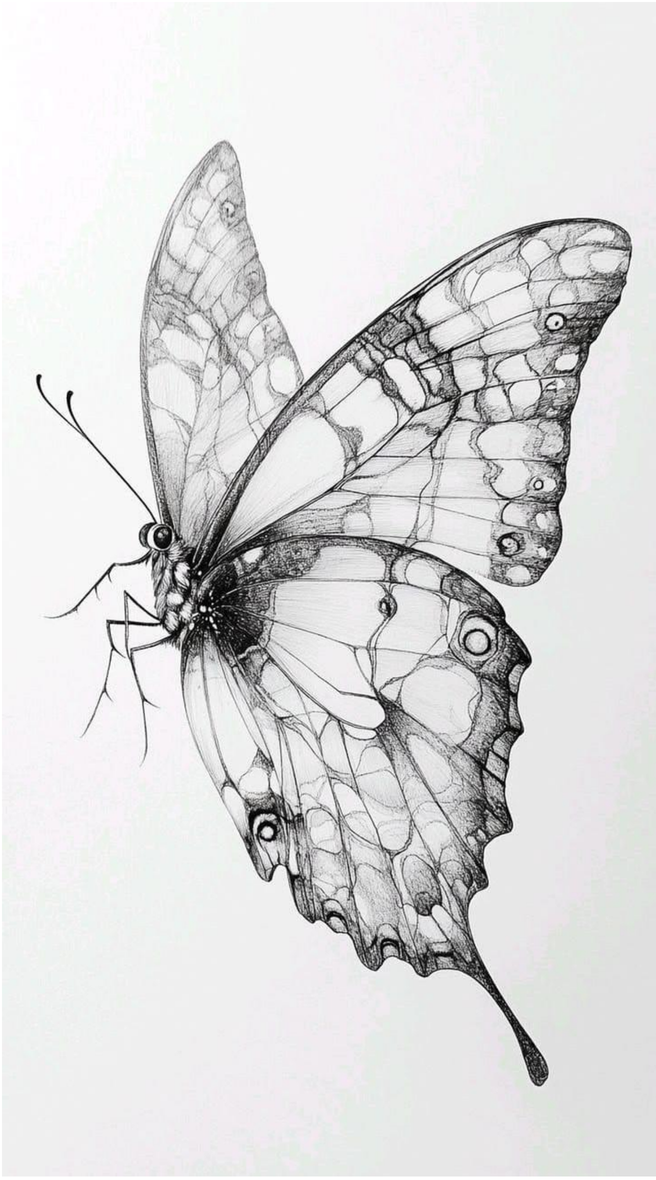

अभीप्सा

जो क्षुद्र के लिए आसक्त होता है
वह क्षुद्र को प्राप्त कर भी ले
तो भी उसे शांति और आनंद
उपलब्ध नहीं होता।
और जो विराट की अभीप्सा से भर जाये
वह अगर विराट को उपलब्ध भी न हो सके
तो भी उसका जीवन आनन्द से भर जाता है
जिन अर्थों में हम श्रेष्ठ की कामना करने लगते है
उन्हीं अर्थों में हमारे भीतर कोई
श्रेष्ठ जागृत होने लगता है।

प्रेम, कर्तव्य और सत्य

ऐसा कौन है इस जगत में
जिसके हृदय में प्रेम की वेदना न हो
कभी न कभी प्रेम की पीड़ा से
मन भरा न हो
हृदय प्रेम से टूट के बिखरा न हो
प्रेम की वेदना ने जीवन आस को बिसराया न हो

ऐसा कौन है इस जगत में
जो कभी न कभी अपने कर्तव्य
से डिगा न हो
जब धर्म और अधर्म के बीच में
द्वंद्व न हो
जब अपने कर्तव्य को लेकर
असमंजस में न पड़ा हो
जब नैतिक दुविधा न हुई हो

ऐसा कौन है इस जगत में
जिसे सत्य ने कभी अचंभित न किया हो
जिसे सत्य की ओर जाने के लिए
दुनिया की अवहेलना न झेलनी पड़ी हो
जिसे सत्य के साथ होने पर
अपनो ने साथ छोड़ा न हो।

प्रेम, कर्तव्य और सत्य को सही तरह से अपने जीवन में उतारने के लिए आंतरिक शांति की आवश्यकता होती है। जिसके लिए श्रेष्ठ ज्ञान, सही दिशा, उच्चतम प्रयास, अविरल भावना के साथ आंतरिक तपस्या करनी होती है।

चंद कागज के टुकड़े

चंद कागज के टुकडे कमाने में
जिंदगी गुजर जाती है

और उन्हीं चंद कागज के टुकड़ों के
सामने इंसान की कीमत कुछ भी नहीं

उम्र गुजर जाती है एक आशियाना बनाने में
लेकिन उस आशियाने की कीमत कुछ नहीं
चंद कागज के टुकड़ों के सामने
हर उम्र के अलग ख्वाहिशों
हर उम्र के अलग तजुर्बे
हर उम्र के अलग कायदे
हर उम्र के अलग मायने
फिर भी इंसान की उम्र की कीमत
कुछ भी नहीं चंद कागज के टुकड़ों के सामने।

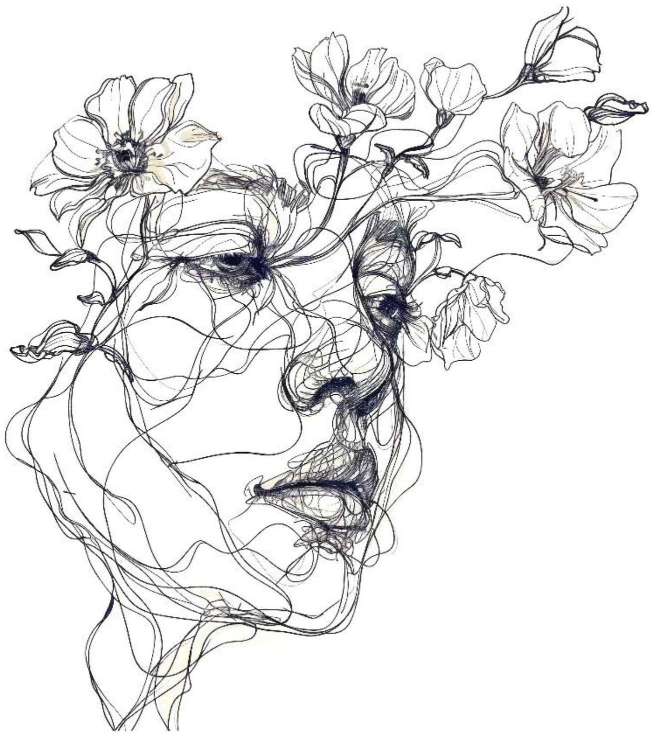

तुम सिर्फ मेरे हो जाओ

सपने सलोने
सुनहरे हो जाए
अनकहे लब्ज
रंग बिरंगे हो जाए
कौन से मंदिर में धागा बांधू
कि तुम सिर्फ
मेरे हो जाओ

प्रेम कितना गहरा है
ये बताना नहीं आता
बिना कहे तुम समझ सको
ये कैसे हो जाता
कौन से मंदिर में धागा बांधू
कि तुम सिर्फ मेरे
हो जाओ।

प्रेम की संपूर्णता

प्रेम अथाह होने के बाद भी संपूर्णत को प्राप्त नहीं हो पा रहा है
क्योंकि प्रेमी के लिए जो विश्वास और आदर पूर्ण रूप से होना चाहिए
वो मन भर नहीं पा रहा
क्योंकि तुम जिनके साथ
मिलकर खेल रहे हो
उन्होंने तुम्हारी प्रतिष्ठा, सामर्थ और (प्रभाव) वर्चस्व पर दाग लगा दिया है
तुम्हारा गौरव छीन लिया है
तुम अपने पूरे सामर्थ और नैतिक
उत्कृष्टता के साथ काम नहीं कर पा रहे हो।
ऐसे ही मिल जाते प्रेम फूल खिल जाते
कोई और न होता मध्य में
स्वप्न सतरंगी हो जाते
तुम और मैं संपूर्ण प्रेममय हो जाते।

बातें है अनमोल

मन उजियारा हो तब सुन लेना
मन उजियारा हो तब कह देना
बाते है अनमोल
मन के अंधियारे में खो जाते है
उजियारे के बोल
उन बोलो का पास में रख लो
मत कर तोलम तोल
बात हैं अनमोल।

स्वाभिमान

बहुत कुछ छोड़कर आयी हूँ
और बहुत कुछ छोड भी सकती हूँ
बात अगर मेरे आत्मसम्मान की है
बात अगर स्वाभिमान की है
तो मैं ऐसी ही हूँ
गलत करना तो मुझे आया ही नहीं कभी
गलत को सहन करने की एक सीमा होती है
गलत लोगों से और गलत तरीकों
से कितने भी लाभ हो उन्हें छोड़ ही सकती हूँ
क्योंकि बात अगर मेरी अंतरआत्मा के सुकून की हो
तो मैं ऐसी ही हूँ।

संवर जाते हैं

जो कठिनाइयों से डरते नहीं
वो संवर जाते है
यथार्थ की ज्वाला में जलकर
निखर जाते है
निखर जाते है कुंदन की तरह
खुशबू बिखेरते है पुष्प की तरह
अतिरमणीय अतिमनमोहक
व्यक्तित्व उभर के आता है
समप्रभा (अदभुत तेज)
नभः शोभनीय की तरह (सुंदर आकाश)।

अपने ही गम से खाली नहीं

गैरों से हमें क्या मतलब
हम अपने ही गम से खाली नहीं
लोग तो बुला के भूल जाते है
और हम यादों से ही खाली नहीं
बहुत हो गया मिलना बिछडना
बहुत हुआ हंसना रोना
अब बस हम और हमारा सुकून है
और कुछ हममें अब बाकी नहीं।

शृंगार

शृंगार करती स्त्री
कामिनी मनभावनी
स्त्री से शृंगार और
शृंगार से स्त्री
शृंगार बिना स्त्री अधूरी
शृंगार अधूरा स्त्री बिन
शृंगार करती स्त्री
मनभावन मनमोहनी
शिख से नख तक
स्वप्न सुंदरी सलोनी
पिया के मन को भाए
प्रेम रस में घुल जाए।

जिंदगी का सफर

सुख दुख का संगम है
जिंदगी का सफर
जय पराजय का खंजर है
जिंदगी का सफर
कल-कल, छल छल सरगम
में बहती नदिया की लहर
जैसे शहर शहर जाकर गाती है खुशनुमा खबर
नदिया की जलधारा गुजरे
जहाँ से भी शस्यश्यामला वार जाए हर डगर
छांव और धूप का है बंधन है जिंदगी का सफर
कभी बरखा तो कभी ज्वाला
बरसाता है ये अंबर
गगन में अनगिनत तारे जैसे
रोशनी का हो बंवडर
चांद की ये चांदनी नगर नगर करती भ्रमण
लाभ हानि का भंवर है
जीवन का सफर।

साजिशों के खंजर

साजिशों के खंजर है
जहर के प्यालों के साथ
इंसानों के मन काले है
मीठी रसीली बातों के साथ
सामने जब आते अपनो के खंजर है
दिल दहल जाता है इन ख्यालों के साथ
व्यथा है ये कि जमीन बंजर है
बीज अंकुरित कैसे हो मीठे पानी के साथ
मोतियों की जंजीरे है कुंदन के पंजर है
कश्ती कैसे पार लगाए अनसुलझे बंधनों के साथ
जिसे देखो यहाँ वह खुद में ही सिकंदर है
दुनिया के सामने सच कैसे लाए
इन झूठ के पुलिंदों के साथ।

बौद्ध ऐसे बनते हैं

पहले सच्चाई की तपिश में
तपना पड़ता है
मन के सारे विकार काम क्रोध
मोह माया ईर्ष्या और
अंहकार को त्याग कर
मन के शुद्धिकरण पे
ध्यान देना होता है
बौद्ध बनने के लिए सर्वप्रथम
मनोभाव शुद्ध करना
आंतरिक शांति प्राप्त करना
ध्यान केन्द्रित करना
भोग की इच्छाओं से
मुक्ति पाना और
सभी मानव जन के लिए
प्रेम और दया का भाव
होना जरूरी है
तब जाके आप बौद्ध जैसे बनते हो।

अमर वरदान

जीवन में जो घाव खाता है
वही सच्चा ज्ञान पाता है
छिपा उस वेदना में
अमर वरदान होता है
सृजन में चोट खाता हैं
छैनी और हथौडे की
वही पाषाण मंदिर में
कहीं भगवान होता है।

राहों में चलते चलते

इन राहों में चलते चलते
सफर तो सबका कट जाएगा
जीवन का यह जलता सूरज
किसी शाम में ढल जाएगा
लेकिन सच्चाई की आग
वह ऐसे लगा जाएगा
जिससे अन्याय और अत्याचार
का ये कहर खाख में मिल जाएगा।

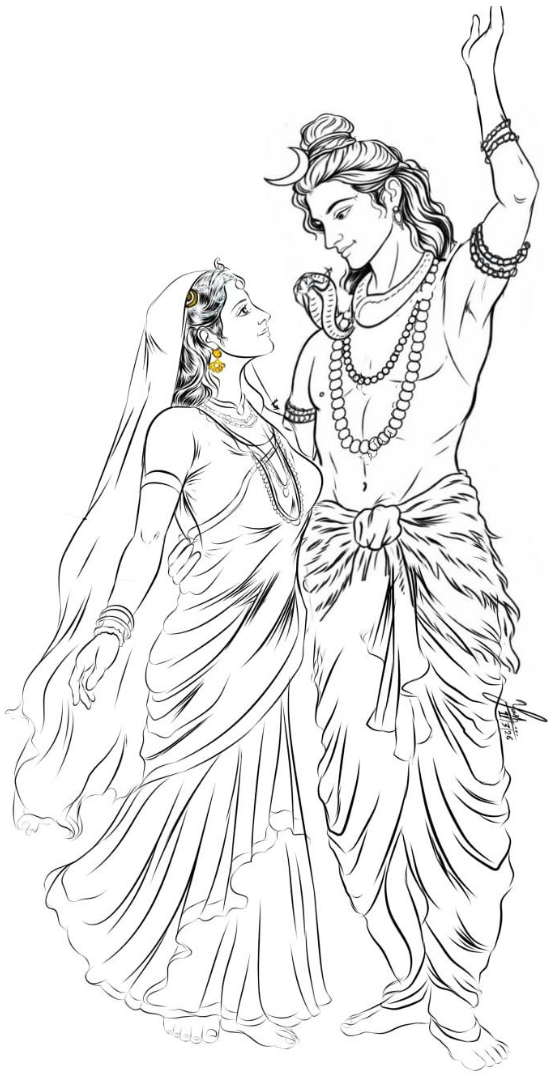

जीवन साथी

जीवन साथी सुंदर शब्द
जीवन के आनंद से भरा हुआ
प्रिय साथी का साथ
जीवन को आनंदित करता है
जीवन के रंग रूप को साथ में सवाँरना
जीवन के कष्टों को साथ में सहन करना
यही साथ एक दृढ़ता प्रदान करता है
भरोसा कायम करता है
दो इंसान मिलकर एक प्यारी सी
छोटी सी दुनिया बनाते है
जिसमें रंग बिरंगे सपने सजते हैं
हर पल खुशियों के मेले बसते हैं
साथ में निभाते है जीवन का हर एक पल
यही होती है खुशियों की कल-कल।

स्मृतियाँ

उपवन में एकांत में जो स्मृतियाँ महसूस होती है
वो मन के उपवन को
सुंदर शांत और प्रिय होती है
स्मृतियाँ प्रेम की बहुत मन भाती है
शांत चित्त में मनुहार करती स्मृतियाँ
मन को शीतल करती चंचल स्मृतियाँ
मन उपवन में रोशनी बिखराती स्मृतियाँ
सुंदर स्मृतियां सुकूनमय होती है
अप्रिय स्मृतियां कष्टदायक होती है
मनोहर स्मृतियों के संजोकर
रखने से हृदय निर्मल हो जाता है।

बंधन रहित प्रेम

बंधन रहित प्रेम जैसे
लक्ष्यहीन कर्तव्य
बंधनरहित प्रेम में न ही कोई
सार्थकता है न ही कोई स्थिरता
प्रेम में अगर निर्भरता न
हो, कोई बंधन न हो तो
प्रेम का उच्चतम स्वरूप कभी
सामने नहीं आता
जब प्रेम में आत्मसर्मपण होता है
तभी प्रेम परिपूर्ण होता है
और आत्मसमर्पण का
संपूर्ण पर्याय है
विवाह का पवित्र बंधन।

संशय

रिश्तों में संशय हो तो
प्यार नहीं हो सकता
परवाह नहीं हो सकती
विश्वास नहीं हो सकता
दो इंसान जिनमें प्यार था
विश्वास ही उनके रिश्ते का आधार था
जीवन में खुशियों का माहौल
ऐसा जैसे हर दिन त्यौहार था
दोनों के मध्य असीम प्रेम का संस्कार था
कभी उनके बीच संशय का
एक झौंका आया
साथ में क्रोध, द्वेष ईर्ष्या का
अंबार लाया
विश्वास का एक कण थी
न रहा तिरस्कार लाया
किरदार बदल गये दोषपूर्ण
व्यवहार लाया
संशय का जहर एक प्यारे से
रिश्ते में विनाश लाया
अभ्यास रहे कि संदेह न हो
प्यार भरे रिश्ते का अंत न हो।

गांव की लड़की

गांव की वो लडकी प्यारी
भोली भाली छब है उसकी न्यारी
जैसे फूलों की मनमोहक खुश्बू भरी क्यारी
हर्ष से भरे मृग नयनी की छवि है बडी प्यारी
लगती है मनभावन अपनों की डुल
सुर सरगम संगीत गुनगुनाती
मन हो जाए बलिहारी
अदभुत प्रतिभा की अधिकारी
गाँव की वो लड़की प्यारी।

मन की दुनिया

मेरे मन की दुनिया में बस एक तुम ही हो
मेरे हर एक एहसास में
बहुत खास हो बस एक तुम ही हो
इस दुनिया में मेरी जिंदगी में मेरे साथ
जो भी हो
मन की दुनिया में, बदंगी में, बस एक
तुम ही हो
तुम ही प्यार हो, तुम ही पूजा हो
तुम ही मेरे दिल का सच्चा सुकून हो
तुम से ही मन की हर बात शुरू हो
एक तमन्ना है मेरे मन की
तुम्हारी बाहों में मेरी जिंदगी खत्म हो
तुम्हारी हर बात सुहानी लगती है
खुद की मैं तेरी दीवानी लगती हूँ
काश तुम मेरी जिंदगी में होते।

खुशबू भावनाओं की

वो चांद अपनी चांदनी को लेने अभी आएगा
वो आज अपनी रागनी को लेने अभी आएगा
वो कर्म अपनी प्रेरणा को लेने अभी आएगा
वो समर्थ अपनी कृति को लेने अभी आएगा
लाएगा खुशबू भावनाओं की
सुरमय साधनाओं की
सौम्यता आकांक्षाओं की
उत्कृष्ठ प्रेरणाओं की
अर्पण करने को अपनी अंजलि
से अभी आएगा
सागर से मोती लेकर
प्रेम धागे में पिरोकर लाएगा
अभी आएगा
झरनो से लेकर संगीत और
संस्कारों के सुर भी लाएगा
अभी आएगा
प्रार्थना की शक्ति प्रभु की भक्ति लाएगा
अभी आएगा।

गुम हुई मैं

एक अन्जानी सी याद है
एक अनचाही सी फरियाद है
कुछ नहीं देखा है पर फिर भी देखा है
कुछ नहीं मांगा है पर फिर भी मांगा है
देखा है किसी को ख्वाबो में
मांगा है किसी को दुआओं में
रहता है हर पल
कोई मीठी सदाओं में
यह बात शुरू हुई कहां से कहाँ खत्म हुई
जानती नहीं मैं इस शाम में कहां गुम हुई
गुम हुई मैं कुछ इस तरह
तेरे संस्मरण में
जैसे नदिया गुम हुई
गहरे समंदर में।

सतरंगी आसमान

शायद-
इस आसमान के भी पीछे एक सुनहरा आसमान
जहाँ रहते हो सोने से हृदय वाले इंसान
शायद......
इस दुनिया में तो कितने भेद है
मानव के हृदय में असीमित ईर्ष्या लोभ और द्वेष है।
शायद ....
वहाँ पावन हृदय के मानवों का वास हो
सुख सम्मति और प्रेम का निवास हो शायद
यहाँ लोग जितने उत्कृष्ठ है उतने भी भ्रष्ट है।
दया रहित मन है
कीमत यहाँ इंसान की कुछ कागज के टुकड़ों से कम है
आदर्शों का मूल्य नकार है हर इंसान के मन में बहुत विकार है
शायद ......
इस आसमान से भी आगे इक सतरंगी संसार हो
जहाँ इंसानों के मन में प्रेम और सच्चा कर्म हो शायद।

तलाश

वो इंसान जो हर काम को
दृढ़ता और स्थिरता से करने वाला
कोई नहीं है उसकी पीड़ा को हरने वाला
कोई याद उसे तभी करता है
जब मकसद पूरा करना होता है
उसके बाद किसी को न उसकी तलाश है
न ही उसकी किसी को याद है
वो सारा जीवन खुद अपनी तलाश करता है
कोई नहीं करता मार्गदर्शन उसका
कोई नहीं कहता सान्तवना के दो बोल
साथ और सहारे की सारी उम्र करता है तलाश।

शब्दों का प्रवाह

शब्द कभी कभी विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देते है।
शब्दों में ही शब्दों का प्रवाह है
अतः शब्दों के इस प्रवाह से ही शब्द हमें
विषमता से उभरने का मार्ग देते है
शब्द सुकून भी है
शब्द तड़प भी है
शब्दों की ताकत इतनी है
कि मन को किसी भी दिशा में
प्रवाहित कर सकते हैं।
और मन से जीवन को
सही दिशा में प्रवाहित कर सकते हैं।
शब्दों के मायाजाल में लोग उलझते है
और उस उलझन से और उस उलझन
से शब्दों के प्रवाह से बाहर आते है।
शब्द अंतरआत्मा को झंझकोर भी सकते है।
शब्द आंतरिक सुकून भी देते हैं
शब्दों के इस मायाजाल को जिसने समझा
उसने मन का सुकून भी पाया और हर जीत हासिल की।
शब्दों के प्रवाह का महत्व इंसान के जीवन में उतना ही है
जितना पानी और वायु का प्रभाव।
शब्दों से ही महाभारत है।
शब्दों से ही बुद्ध है।
शब्दों से ही राग है
शब्दों से ही द्वेष है।
शब्दों से तपिष है,
शब्दों में शीतलता,
शब्दों से ही जोग है,

शब्दों में ही वियोग है
शब्दों से ही प्रतियोग है
इसीलिए जितना हो सके शब्दों के प्रवाह को समझिये
और इसको सही तरह से उपयोग कीजिये
आपकी जिंदगी में उत्तम परिवर्तन कर सकते है।

आखिर क्यों

ऐसा क्यों होता है कि कभी
अचानक कोई खुशी हमारे पास आती है
और हम बहुत खुश होते है
बहुत सारे सपने सजाते
हमारे दिल में ढेर सारी उमंगे होती हैं
ढेर सारे सपने होते हैं
जो हमें हर पल हँसाती हैं
फिर अचानक एक झटके में ही
हमारी सारी खुशियाँ बिखर जाती हैं
हमारे सारे सपने चूर चूर हो जाते हैं
फिर शायद हमें हँसना बेमानी लगता है
शायद हमारे पास से कोई हमारी
खुशियां छीनकर ले जाता है और
बदले में ढेर सारे दुख दे जाता है
फिर से कभी अचानक कोई खुशी
हमारे पास आती है और फिर वो बिखर जाती है
ये सिलसिला सारी जिंदगी चलता है
भगवान हमारे साथ ऐसा
खिलवाड़ क्यों करता है?
क्यों वह हमें कठपुतली की तरह नचाता है
अगर उसे ऐसा ही करना था तो
उसने हमारे अंदर एक मन क्यों बनाया
क्यों मन के अंदर भावनाओं को बनाया ?
क्यों वो इन भावनाओं को
जोड़ता तोड़ता रहता है
उसे हमारे साथ इस तरह खेलने
में क्या मिलता है।

उसका भी तो मन होगा
उनके मन में भी भावनाएं होंगी
तब भी
तो हमारी भावनाओं को नहीं
समझता
"आखिर क्यों"
रखकर हमारे अंदर मन को
और मन में रखकर भावनाओं को
कहा हमसे इसे संभालो
और इस मतलबी दुनिया
में भेज दिया हमको
और अब ऊपर बैठे बैठे
करता है खिलवाड़
खुद चलाता है दुनिया को
मन के खिलाफ
अगर ये मन न होता तो
कुछ दिक्कत ही न होती
पर हम क्या करें
किसकी सुनें
दुनिया के साथ चलें
या मन की सुने
फिर शायद एक दिन ऐसा आएगा
कि हम या तो दुनिया का
साथ छोड़ देंगे
या मन की भावनाओं को ही
तोड़ देंगे
भुला देगे हर वो बात
जो मन के लिए होती है
और जो मन से जुड़ी होती है
छोड़ देंगे हर वो राह
जो मन से शुरू होती है

और मन तक ही जाती है
फिर दुनिया में क्या रह जायेगा
न मन होगा
न मन की भावनाएं होगी
उस दिन ये दुनिया बेमानी रह जायेगी
उस दिन हर सच्चाई
झूठी हो जायेगी।